श्री वैष्णो चालीसा

॥ दोहा ॥

गरुड़ वाहिनी वैष्णवी

त्रिकुटा पर्वत धाम।

काली, लक्ष्मी, सरस्वती

शक्ति तुम्हें प्रणाम॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

॥ चौपाई॥

नमो नमो वैष्णो वरदानी,

कलि काल में शुभ कल्याणी।

मणि पर्वत पर ज्योति तुम्हारी,

पिंडी रूप में हो अवतारी।

देवी देवता अंश दियो है,

रत्नाकर घर जन्म लियो है।

करी तपस्या राम को पाऊँ,

त्रेता की शक्ति कहलाऊँ।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

कहा राम मणि पर्वत जाओ,

कलियुग की देवी कहलाओ।

विष्णु रूप से कल्की बनकर,

लूंगा शक्ति रूप बदलकर।

तब तक त्रिकुटा घाटी जाओ,

गुफा अंधेरी जाकर पाओ।

काली-लक्ष्मी-सरस्वती माँ,

करेंगी शोषण-पार्वती माँ।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

ब्रह्मा, विष्णु, शंकर द्वारे,

हनुमत, भैरों प्रहरी प्यारे।

रिद्धि, सिद्धि चंवर डुलावे,

कलियुग-वासी पूजन आवें।

पान सुपारी ध्वजा नारियल,

चरणामृत चरणों का निर्मल।

दिया फलित वर माँ मुस्काई,

करन तपस्या पर्वत पर आई।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

कलि कालकी भड़की ज्वाला,

इक दिन अपना रूप निकाला।

कन्या बन नगरोटा आई,

योगी भैरों दिया दिखाई।

रूप देख सुन्दर ललचाया,

पीछे-पीछे भागा आया।

कन्याओं के साथ मिली माँ,

कौल कंदौली तभी चली माँ।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

देवा माई दर्शन दीना,

पवन रूप हो गई प्रवीणा।

नवरात्रों में लीला रचाई,

भक्त श्रीधर के घर आई।

योगिन को भण्डारा दीना,

सबने रुचिकर भोजन कीना।

मांस, मदिरा भैरों मांगी,

रूप पवन कर इच्छा त्यागी।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

बाण मारकर गंगा निकाली,

पर्वत भागी हो मतवाली।

चरण रखे आ एक शिला जब,

चरण-पादुका नाम पड़ा तब।

पीछे भैरों था बलकारी,

छोटी गुफा में जाय पधारी।

नौ माह तक किया निवासा,

चली फोड़कर किया प्रकाशा।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

आद्या शक्ति-ब्रह्म कुमारी,

कहलाई माँ आद कुंवारी।

गुफा द्वार पहुंची मुस्काई,

लांगुर वीर ने आज्ञा पाई।

भागा-भागा भैरों आया,

रक्षा हित निज शस्त्र चलाया।

पड़ा शीश जा पर्वत ऊपर,

किया क्षमा जा दिया उसे वर।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

अपने संग में पुजवाऊंगी,

भैरों घाटी बनवाऊंगी।

पहले मेरा दर्शन होगा,

पीछे तेरा सुमरन होगा।

बैठ गई माँ पिण्डी होकर,

चरणों में बहता जल झर झर।

चौंसठ योगिनी-भैरों बरवन,

सप्तऋषि आ करते सुमरन।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

घण्टा ध्वनि पर्वत पर बाजे,

गुफा निराली सुन्दर लागे।

भक्त श्रीधर पूजन कीना,

भक्ति सेवा का वर लीना।

सेवक ध्यानूं तुमको ध्याया,

ध्वजा व चोला आन चढ़ाया।

सिंह सदा दर पहरा देता,

पंजा शेर का दुःख हर लेता।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

जम्बू द्वीप महाराज मनाया,

सर सोने का छत्र चढ़ाया।

हीरे की मूरत संग प्यारी,

जगे अखण्ड इक जोत तुम्हारी।

आश्विन चैत्र नवराते आऊँ,

पिण्डी रानी दर्शन पाऊँ।

सेवक शर्मा शरण तिहारी,

हरो वैष्णों विपत हमारी।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

॥ दोहा॥

कलियुग में महिमा तेरी,

है माँ अपरम्पार।

धर्म की हानि हो रही,

प्रगट हो अवतार॥

हिन्दीपथ.कॉम

अन्य चालीसा पढ़े

- हनुमान चालीसा
- शिव चालीसा
- दुर्गा चालीसा
- शनि चालीसा
- गणेश चालीसा
- लक्ष्मी चालीसा
- राम चालीसा
- विष्णु चालीसा
- गायत्री चालीसा
- काली चालीसा
- भैरव चालीसा
- सरस्वती चालीसा
- कृष्ण चालीसा
- सूर्य चालीसा
- महावीर चालीसा
- साईं चालीसा
- महाकाली चालीसा
- तुलसी चालीसा
- बगलामुखी चालीसा
- गोरख चालीसा
- गोपाल चालीसा
- नवग्रह चालीसा
- रविदास चालीसा
- बाला जी चालीसा
- महालक्ष्मी चालीसा
- पार्वती चालीसा

- खाटू श्याम चालीसा
- रामदेव चालीसा
- राधा चालीसा
- विश्वकर्मा चालीसा
- पितर चालीसा
- बटुक भैरव चालीसा
- जाहरवीर चालीसा
- गिरिराज चालीसा
- नर्मदा चालीसा
- प्रेतराज चालीसा
- संतोषी चालीसा
- गंगा चालीसा
- शारदा चालीसा
- ललिता चालीसा
- अन्नपूर्णा चालीसा
- श्री वैष्णो चालीसा
- परशुराम चालीसा
- विन्ध्येश्वरी चालीसा
- ब्रह्मा चालीसा
- शाकम्भरी चालीसा
- राणी सती चालीसा
- गंगाराम चालीसा
- बालक नाथ चालीसा
- मोहन राम चालीसा
- शीतला चालीसा